ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 236-237**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

अमृता प्रीतम : एक बग़ावती आत्मा की अमर कथा

सोनी कुमारी कृष्णा
हिन्दी, हैदराबाद, (तेलंगाना) भारत

Received-20.06.2025, Revised-26.06.2025, Accepted-30.06.2025 **E-mail : prakritiprakriti10@gmail.com**

सारांशः "मैं तैनूं फिर मिलांगी"– यह पंक्ति सुनते ही अमृता प्रीतम की छवि आँखों के सामने उभर आती है। एक ऐसी कवयित्री, जो दर्द में भी प्रेम खोज लेती थी, और प्रेम में भी विद्रोह। अमृता प्रीतम न सिर्फ़ एक नाम है, बल्कि एक समूचा युग है– स्त्री आत्मा की मुक्ति का, साहित्य में स्त्री चेतना के जागरण का, और प्रेम की अनंत यात्रा का। उनका जीवन एक खुले उपन्यास की तरह है, जिसमें पीड़ा है, प्रेम है, क्रांति है और तलाश है।

कुंजीभूत शब्द– अमृता प्रीतम, कवयित्री, दर्द, प्रेम, विद्रोह, प्रेम की अनंत यात्रा, साहित्य में स्त्री चेतना, स्त्री आत्मा की मुक्ति

जन्म और आरंभिक जीवन– अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त 1919 को गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में) हुआ था। उनका मूल नाम अमृता कौर था। पिता गुरमुख सिंह एक विद्वान और कवि थे, जिनका प्रभाव अमृता पर बचपन से ही पड़ा। मां का देहांत तब हो गया जब अमृता महज़ 11 वर्ष की थीं। यह पहली बड़ी चोट थी जिसने उनके भीतर एक ख़ालीपन और गहराई दोनों को जन्म दिया।

बचपन से ही वह कल्पनाशील और संवेदनशील थीं। वे रेडियो पर कविताएं पढ़ा करतीं और स्कूल–कॉलेज में एकदम अलग सी दिखतीं। उनके भीतर बैठी कवयित्री ने बहुत जल्दी जाग्रत होना शुरू कर दिया।

प्रेम और विद्रोह की पहली चिंगारी– 16 वर्ष की उम्र में उनका विवाह प्रीतम सिंह से हुआ और वे 'अमृता कौर' से 'अमृता प्रीतम' बन गईं। लेकिन यह संबंध ज्यादा समय तक उन्हें बाँध नहीं सका। यह विवाह सामाजिक था, आत्मिक नहीं। अमृता ने विवाह जैसी संस्था को हमेशा सवालों की नज़र से देखा और उसमें स्त्री की पहचान को खोता पाया।

यहीं से उनके भीतर की बग़ावती स्त्री ने जन्म लिया। उन्होंने समाज के नियमों से विद्रोह करना शुरू कर दिया कृ वे साड़ी छोड़ सलवार–कुर्ता पहनने लगीं, बाल छोटे कर लिए, और सबसे बढ़कर, उन्होंने अपने दिल की सुननी शुरू की।

लेखन की शुरुआत और उर्दू प्रेम– अमृता का साहित्यिक सफ़र बहुत छोटी उम्र में शुरू हो गया था। उनकी पहली कविता संग्रह ष्अमृत लहरेंष् मात्र 16 वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई। शुरू में वे उर्दू में लिखा करती थीं और उनके लेखन में ग़ज़ल, नज़्म और रुहानी प्रेम की झलक मिलती थी। उनके शब्दों में करुणा थी, क्रांति थी और एक औरत की पीड़ा भी थी।

बंटवारा और दर्द की स्याही– 1947 का भारत विभाजन न केवल देश के नक्शे को बदलने वाला हादसा था, बल्कि अमृता के जीवन को भी हिला देने वाला मोड़ था। वह लाहौर में थीं और हिंदू होने के कारण उन्हें भारत आना पड़ा। अपने पीछे उन्होंने वह शहर, वह ज़मीन, और सबसे महत्वपूर्ण– अपने पहले प्यार साहिर लुधियानवी को छोड़ दिया।

विभाजन की त्रासदी ने उनके लेखन को और अधिक दर्दनाक और प्रभावशाली बना दिया। उन्होंने विभाजन पर आधारित प्रसिद्ध उपन्यास ष्पिंजरष् लिखा, जो एक मुस्लिम लड़की श्परोश् की कहानी है कृ एक प्रतीक कि कैसे देश की सीमाओं के साथ–साथ औरतों की आत्मा भी खंडित होती है। यह उपन्यास आज भी विभाजन–साहित्य की एक अमर कृति मानी जाती है।

साहिर लुधियानवीः एक अनकहा प्रेम– अमृता प्रीतम का सबसे चर्चित और रहस्यमयी रिश्ता था साहिर लुधियानवी से। यह प्रेम बिना किसी सामाजिक पहचान के, शब्दों में बसा हुआ था। साहिर की सिगरेट के बचे टुकड़ों को अमृता संभालकर रखती थीं कृ यह उनका प्रेम था, परिभाषाओं से परे।

उन्होंने कभी साहिर से खुले तौर पर अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं की, लेकिन उनका समर्पण आज भी साहित्यिक प्रेम की सबसे अनूठी मिसाल माना जाता है। अमृता ने अपनी आत्मकथा ष्रसीदी टिकटष् में इस प्रेम का मार्मिक चित्रण किया है।

इमरोज़ः जीवन का दूसरा अध्याय– जहाँ साहिर एक अधूरा प्रेम था, वहीं इमरोज़ (चित्रकार इंद्रजीत) उनके जीवन का स्थायी साथी बनकर आए। यह रिश्ता भी विवाह से परे था, लेकिन गहरे आत्मिक जुड़ाव से भरा। इमरोज़ अमृता के जीवन में प्रेम, स्थायित्व और सहारा लेकर आए। वे दोनों लगभग चालीस साल साथ रहे। इमरोज़ ने लिखा कृ "मैंने अमृता से सिर्फ़ प्रेम किया, कभी शादी नहीं मांगी।" यह एक आत्मा से दूसरी आत्मा की यात्रा थी।

साहित्यिक योगदान और प्रमुख रचनाएँ– अमृता प्रीतम ने 100 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें कविता–संग्रह, उपन्यास, आत्मकथाएँ और निबंध शामिल हैं। उनकी लेखनी में स्त्री की पीड़ा, प्रेम की लालसा, आत्मा की तलाश और सामाजिक विद्रोह की तीव्रता झलकती है।

प्रमुख रचनाएँ :

- पिंजर (उपन्यास): स्त्री की अस्मिता और विभाजन की त्रासदी पर आधारित।
- रसीदी टिकट (आत्मकथा): साहिर और इमरोज़ के साथ रिश्तों की सच्चाई।
- अज्ज आखाँ वारिस शाह नूं (कविता): बंटवारे की पीड़ा से जन्मी प्रसिद्ध कविता।
- कागज़ ते कैनवासः इमरोज़ के साथ जीवन के अनुभव।
- एक थी अनीता, कच्चा रास्ता, कलियों का चमन, धूप का टुकड़ा– विविध विषयों पर आधारित।

भाषा और शैली– अमृता की भाषा सरल, भावपूर्ण और मार्मिक थी। उनकी शैली आत्मकथात्मक, भावनात्मक और संवेदनशील थी। वे गहरे भावों को सहज भाषा में व्यक्त करने की क्षमता रखती थीं। उनका लेखन पाठकों को अंदर तक छू जाता है।

पुरस्कार और सम्मान– अमृता प्रीतम को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले, जिनमें शामिल हैं:

- साहित् अकादमी पुरस्कार (1956): 'सुनहरे' के लिए
- पद्मश्री (1969) और पद्मविभूषण (2004)

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

- ज्ञानपीठ पुरस्कार (1981): पंजाबी साहित्य में यह सम्मान पाने वाली पहली महिला
- लेखक की पेंशनः भारत सरकार द्वारा

एक औरत की आवाज़– अमृता प्रीतम सिर्फ़ एक कवयित्री नहीं थीं, वह एक आंदोलन थीं। उन्होंने स्त्री की आत्मा को अभिव्यक्ति दी कृ उसके सपनों, इच्छाओं, असहमतियों और विद्रोह को शब्द दिए। वे करती थीं कृ "औरतें सिर्फ़ घर नहीं बसातीं, वे अपनी आत्मा को भी बचाती हैं।"

उनका जीवन इस बात का प्रतीक था कि औरत बिना विवाह, बिना परिभाषा, सिर्फ़ प्रेम और आत्मा के सहारे भी पूर्ण हो सकती है।

अंतिम यात्रा– 31 अक्टूबर 2005 को अमृता प्रीतम ने इस दुनिया को अलविदा कहा। लेकिन उनका साहित्य, उनका प्रेम, उनकी आज़ाद रूह आज भी हमारे बीच जीवित है।

उपसंहार– अमृताः शब्दों की वह अमर ज्वाला अमृता प्रीतम का जीवन प्रेम और विद्रोह का संगम था। उन्होंने अपने जीवन को किसी सामाजिक साँचे में नहीं ढाला, बल्कि खुद अपना साँचा गढ़ा। उन्होंने अपने शब्दों से लाखों औरतों को यह सिखाया कि अपने सपनों और अपनी अस्मिता के लिए खड़ा होना कोई गुनाह नहीं।

उनका जीवन, उनकी कविताएँ और उनका प्रेम आज भी हमसे यही कहते हैंः

"मैं तैनूं फिर मिलांगी"
कित्थे ? किस तरह ? पता नहीं
शायद ख्याल बनके तेरे मन विच वस जावांगी"

*****